127

# मेरठ जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन परिवारों को गरीबी-रेखा से ऊपर उठाने के उद्देश्य से उनकी वित्तीय आवश्यकताओं का मूल्यांकन

चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विषय में
विद्या-वाचस्पति की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

126


शोधकर्ता :

**मयंक मोहन**
*एम० ए० (अर्थशास्त्र)*
152-ए, नेहरूनगर, गढ़ रोड
मेरठ-250 002 (उ०प्र०)



*आन्तरिक शोध निर्देशक :*
**डॉ० आर० सी० अग्रवाल**
*एम० ए०; एम० एस-सी०; पी-एच० डी०*
*रीडर, अर्थशास्त्र विभाग,*
देवनागरी महाविद्यालय,
मेरठ-250 002 (उ०प्र०)

*बाह्य शोध निर्देशक :*
**डॉ० के० डी० गौड**
*उप-निदेशक*
*आई० सी० एस० एस० आर०*
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार)
नई दिल्ली-110 067

# समर्पण

मैं प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को अपनी परम् श्रद्धेय दादी जी (श्रीमती प्रेमवती) के चरणों में श्रद्धा-सुमन के रूप में अर्पित करता हूँ। यदि मैं उन वात्सल्य की देवी के लिये कुछ भी कर सकूँ तो यह मेरे ऊपर प्रभु की असीम अनुकम्पा होगी।

—मयंक मोहन

**डॉ० आर०सी० अग्रवाल**
*(रीडर)*
**अर्थशास्त्र विभाग**

दूरभाष : 656644
देवनागरी महाविद्यालय
मेरठ (उ०प्र०)

दिनांक : 11/10/99

# प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री मयंक मोहन** द्वारा अर्थशास्त्र विषय में विद्या-वाचस्पति की उपाधि हेतु चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय में जो शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया जा रहा है, वह मेरे निर्देशन में उनके स्वयं के स्वतन्त्र प्रयासों से पूर्ण किया गया है। इनका शोध-विषय **"मेरठ जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन परिवारों को गरीबी-रेखा से ऊपर उठाने के उद्देश्य से उनकी वित्तीय आवश्यकताओं का मूल्यांकन"** है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि **श्री मयंक मोहन** ने विश्वविद्यालय अधिनियम में वर्णित अध्यादेश 14 के प्रावधानों के अनुसार आवश्यक अवधि एवं शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी सभी औपचारिकताएँ पूरी की हैं।

R. C. Agl.

**डॉ० आर०सी० अग्रवाल**
(आन्तरिक शोध निर्देशक)

# भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद

**(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार), नई दिल्ली**

**डॉ० के० डी०गौड़**
(उप-निदेशक)

दूरभाष : (011)6179834
पो०बाक्स सं० 10528
अरूणा आसफ अली मार्ग
नई दिल्ली—110 067

दिनांक : 11/10/99

## प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **श्री मयंक मोहन** द्वारा अर्थशास्त्र विषय में विद्या-वाचस्पति की उपाधि हेतु चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय में जो शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया जा रहा है, वह मेरे निर्देशन में उनके स्वयं के स्वतन्त्र प्रयासों से पूर्ण किया गया है। इनका शोध-विषय **"मेरठ जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन परिवारों को गरीबी-रेखा से ऊपर उठाने के उद्देश्य से उनकी वित्तीय आवश्यकताओं का मूल्यांकन"** है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि **श्री मयंक मोहन** ने विश्वविद्यालय अधिनियम में वर्णित अध्यादेश 14 के प्रावधानों के अनुसार आवश्यक अवधि एवं शोध-प्रबन्ध के प्रस्तुतीकरण सम्बन्धी सभी औपचारिकताएँ पूरी की हैं।

(डॉ० के० डी० गौड़)
(बाह्य शोध-निर्देशक)

# प्राक्कथन

सामान्यत: यह अनुभव किया जाता रहा है कि ग्रामीण अंचलों में निवास करने वाले निर्धन परिवारों का प्रत्येक 'कार्य करने-योग्य सदस्य' सूर्य की पहली किरण निकलने के साथ ही अपना कार्य प्रारम्भ कर देता है तथा देर सांय तक अपना पसीना बहाता रहता है। परन्तु विड़म्बना यह है कि इतने पर भी ऐसे परिवार सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी आधे पेट भोजन एवं घुटनों तक की लंगोटी के सहारे ही अपना जीवन बिताते आ रहे हैं तथा गरीबी, भुखमरी एवं ऋणग्रस्तता से वे कभी अवमुक्त नहीं हो पाये हैं।

यद्यपि सरकार ने भारत के ग्रामीण अचंलों में व्याप्त गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी जैसी समस्याओं के उन्मूलन के लिये समय-समय पर विभिन्न परियोजनायें प्रारम्भ की हैं तथा उन परियोजनाओं के सफल संचालन के लिये पर्याप्त धनराशि भी खर्च की है, परन्तु अन्त में यही देखने को मिला है कि इनमें से अधिकतर परियोजनायें या तो मात्र कागजों में ही सिमट कर रह गयी हैं अथवा उनसे वांछित परिणामों की प्राप्ति नहीं की जा सकी है। यदि इन परियोजनाओं की असफलता के मूल में झाँक कर देखा जाये तो यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि यद्यपि प्रत्यक्ष रूप में तो प्रस्तुत परियोजनायें ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले निर्धन परिवारों के आर्थिक विकास के लिये पूर्णतया उपयुक्त प्रतीत होती हैं जबकि वास्तविकता यह है कि इन परियोजनाओं के निर्माण में हमारे मंत्रियों, जन-प्रतिनिधियों एवं नीति-निर्धारकों का ग्रामीण समस्याओं के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़े होने का अभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

इन परिस्थितियों के चलते न तो सरकार द्वारा संचालित परियोजनायें अपना उद्देश्य पूरा कर पाती हैं और न ही इससे गरीब ग्रामीण परिवारों का भला हो पाता है। ग्रामीण क्षेत्रों से बेरोजगारी की समाप्ति एवं गरीबी की रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रहे परिवारों के उत्थान के लिये यह आवश्यक

है कि समस्या की गहनता को समझते हुए इसके मूल में छिपे कारणों का पता लगाया जाये तथा इस बात का अनुमान लगाया जाये कि ग्रामीण-निर्धन परिवारों को गरीबी-रेखा से ऊपर उठाने के लिये वास्तव में उनकी कितनी वित्तीय आवश्यकतायें हैं तथा इन आवश्यकताओं की पूर्ति विभिन्न परियोजनाओं की सहायता से किस प्रकार की जा सकती है? इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शोध का विषय—**"मेरठ जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धन परिवारों को गरीबी-रेखा से ऊपर उठाने के उद्देश्य से उनकी वित्तीय आवश्यकताओं का मूल्यांकन"** लिया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों का चयन किया गया है तथा इन विकास खण्डों में निवास करने वाले 400 लाभार्थियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार द्वारा प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किये गये समंकों एवं सूचनाओं की सहायता से जनपद मेरठ के ग्रामीण निर्धन परिवारों की आय, व्यय, बचत, ऋण-भुगतान क्षमता, सम्पत्ति-संरचना, ऋण-संरचना, विभिन्न परियोजनाओं की क्षेत्रीय उपयुक्तता एवं उनका लाभार्थियों के जीवन-स्तर पर प्रभाव आदि का गहन विश्लेषण किया गया है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये सम्पूर्ण शोध-प्रबन्ध को कुल नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रथम अध्याय में जनपद मेरठ की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना, ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त गरीबी एवं बेरोजगारी, गरीबी की अवधारणा एवं गरीबी-रेखा के नीचे रह रहे कार्यशील कर्मकरों की रोजगार-संरचना तथा निर्धन परिवारों के आर्थिक सुधार के लिये उपयुक्त परियोजनाओं की आवश्यकता की समीक्षा की गई है। द्वितीय अध्याय में गरीबी उन्मूलन के सम्बन्ध में पूर्व अध्ययनों की समीक्षा तथा शोध-कार्य का औचित्य, उद्देश्य, परिकल्पना, समस्यायें एवं शोध-प्रणाली को स्पष्ट किया गया है। तृतीय अध्याय में ग्रामीण निर्धन परिवारों की रोजगार-संरचना, आय-संरचना तथा सम्पत्ति-संरचना का विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ अध्याय में जनपद मेरठ के ग्रामीण निर्धन परिवारों की ऋण-संरचना एवं जनपद मेरठ में विभिन्न प्रकार के ऋण-स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। पंचम अध्याय के अन्तर्गत विभिन्न परियोजनाओं की क्षेत्रीय वित्तीय उपयुक्तता का आकलन तथा विभिन्न वर्गों के लाभार्थियों के

लिये परियोजनाओं के चयन की समीक्षा की गई है। षष्ठ अध्याय में निर्धन परिवारों के ऋण-भार को समाप्त करने के लिये उनकी वित्तीय आवश्यकता का आकलन, विभिन्न परियोजनाओं को सुचारू रूप से चलाने के लिये आवश्यक वित्तीय पर्याप्तता का आकलन, निर्धन परिवारों को विभिन्न परियोजनाओं के अन्तर्गत सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता राशि का विश्लेषण तथा विभिन्न परियोजनाओं के लिये सरकार द्वारा प्रदत्त वित्तीय-सहायता एवं वास्तविक वित्तीय आवश्यकता का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। सप्तम अध्याय में परियोजनाओं से लाभार्थियों की आय के सृजन, उनकी बचत तथा ऋण-भुगतान क्षमता का आकलन किया गया है। अष्ठम अध्याय में विभिन्न परियोजनाओं का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। नौवे अध्याय में सम्पूर्ण शोध कार्य के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये हैं तथा उनके संदर्भ में रचनात्मक सुझाव प्रस्तावित किये गये हैं। शोधार्थी को इस बात का पूर्ण विश्वास है कि जनपद मेरठ के ग्रामीण निर्धन परिवारों की आर्थिक-स्थिति में सुधार के लिये जो सुझाव दिये गये हैं, यदि उन पर गम्भीरता से विचार किया गया तो ग्रामीण निर्धन परिवारों के आर्थिक-उत्थान के लिए सरकार द्वारा संचालित परियोजनायें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में अवश्य ही सफल होंगी तथा वर्तमान के ग्रामीण निर्धन परिवारों के स्मृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

—मयंक मोहन

# आभार-अभिव्यक्ति

सर्वप्रथम मैं अपने वन्दनीय आन्तरिक शोध-निर्देशक डॉ० आर० सी० अग्रवाल, रीडर, अर्थशास्त्र विभाग, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ का हृदय से आभारी हूँ जो मुझे शोध कार्य की सम्पूर्ण अवधि में अपनी ज्ञान-गंगा से सिंचित तथा अपने अमूल्य सुझावों से परिपूरित करते रहे।

मैं अपने बाह्य शोध निर्देशक श्रद्धेय डॉ० के० डी० गौड़, उप-निदेशक, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (मानव संसाधन विकास मन्त्रालय), नई दिल्ली का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मुझे अपने अथाह ज्ञान-सागर में स्नान करने का अवसर प्रदान किया तथा सम्पूर्ण शोध-अवधि में मुझे पुत्रवत् स्नेह देते रहे।

डॉ० के० डी० अग्रवाल, भूतपूर्व प्राचार्य, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ; प्रोफेसर के० एन० नागर, भूतपूर्व प्राचार्य देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ, तथा भूतपूर्व डीन एवं कन्वीनर, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ; डॉ० बी० बी० कन्सल, भूतपूर्व डीन एवं कन्वीनर, चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ तथा डॉ० ओ० पी० अग्रवाल, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, एन० आर० ई० सी० महाविद्यालय, खुर्जा तथा भूतपूर्व डीन एवं कन्वीनर चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ; डॉ० आर०सी० गर्ग, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, एम० पी० जी०, महाविद्यालय, मंसूरी का आभार व्यक्त करते हुए मुझे ऐसी सुखद अनुभूति हो रही है जिसको शब्दों में व्यक्त किया जाना इन श्रद्धेयजनों के प्रति मेरी भावनाओं की अभिव्यक्ति का किंचित अवमूल्यन ही होगा।

मैं डॉ० पी० सी० पचौरी, प्राचार्य, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ; डॉ० जे० सी० पन्त, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ; डॉ० एस० के० अग्रवाल, वरिष्ठ प्रवक्ता, वाणिज्य संकाय, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ; डॉ० अनिल कुमार गुप्ता, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर; डॉ० अशोक कुमार मित्तल, सनातन धर्म महाविद्यालय, मुजफ्फरनगर तथा अर्थशास्त्र विभाग एवं वाणिज्य संकाय, देवनागरी महाविद्यालय, मेरठ के समस्त प्रबुद्ध शिक्षकों का हृदय से ऋणी हूँ जिन्होंने मेरे शोध-कार्य के सम्बन्ध में समय-समय पर अपने अमूल्य सुझाव देकर मेरा मार्ग-दर्शन किया तथा

अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान किया।

मैं श्रद्धेय गुरू-माता सुश्री डॉ० उर्मिला अग्रवाल, उप-प्राचार्य, इस्माइल गर्ल्स कॉलेज, मेरठ के चरणों में अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ जिन्होंने मुझे शोध-कार्य को पूर्ण लगन से पूरा करने के लिये निरन्तर प्रेरित किया तथा अपने वात्सल्य की अमृत-वर्षा से सिंचित करती रही। मैं भविष्य में भी उनके इसी वात्सल्य-वर्षा का सुख-पान करता रहूँ, यही मेरी अभिलाषा एवं ईश्वर से प्रार्थना है।

मैं डॉ० विनोद कुमार गोयल, सांख्यिकीय विभाग, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त रचनात्मक सहयोग के लिये धन्यवाद हेतु अपनी अनुभूति को शब्दों में व्यक्त नहीं कर पा रहा हूँ जिन्होंने निरन्तर मेरा उत्साह-वर्द्धन किया तथा मेरे शोध-विषय से सम्बन्धित साहित्य-संकलन के कार्य में प्रारम्भ से अन्त तक अपनी चिर-परिचित कर्मठ-शैली का परिचय दिया।

मैं श्री चन्द्र पाल तोमर, खण्ड विकास अधिकारी, रजपुरा विकास खण्ड, मेरठ (1994-97); श्री चरण सिंह, कार्यकारी खण्ड विकास अधिकारी रजपुरा विकास खण्ड, मेरठ (वतर्मान); श्री श्याम सिंह शर्मा, खण्ड विकास अधिकारी, हस्तिनापुर विकास खण्ड, मेरठ; श्री डी० वी० सक्सैना, वरिष्ठ निरीक्षक, जिला उद्योग केन्द्र, मेरठ; श्री पी०के० गोयल, सहायक प्रबन्धक (विपणन), जिला उद्योग केन्द्र, मेरठ; श्री अमित कुमार, जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी, मेरठ; श्री भीम सैन, सहायक अर्थ एवं संख्याधिकारी मेरठ; श्री सुनील मिश्रा, सहायक काटोग्राफर, जिला अर्थ एवं संख्या कार्यालय, मेरठ; श्री ए० के० गौतम, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, मत्स्य पालन विकास अभिकरण, मेरठ; श्री विजेन्द्र सिंह, मत्स्य निरीक्षक, कार्यालय मुख्य कार्यकारी अधिकारी, मत्स्य पालन विकास अभिकरण, मेरठ; जिला ग्राम्य विकास अधिकारी, ग्राम्य विकास अभिकरण, मेरठ; श्री महेशचन्द, मुख्य विकास अधिकारी, मेरठ; श्री भारत यादव, जिला विकास अधिकारी, मेरठ; श्री बाबूराम, वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय मुख्य विकास अधिकारी, मेरठ एवं उन सभी कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे शोध-कार्य में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहयोग प्रदान किया है।

मैं आई०सी०एस०एस०आर० नई दिल्ली, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली; कृषि मन्त्रालय,

ग्रामीण विकास विभाग, नई दिल्ली; चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ तथा देवनागरी महाविद्यालय मेरठ के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं समस्त कर्मचारियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग से मुझे अपने शोध-सम्बन्धी साहित्य की प्राप्ति एवं मनन का अवसर प्राप्त हुआ।

मैं विश्वविद्यालय के शोध-विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का उनके द्वारा प्रदत्त स्नेह एवं विनम्र सहयोग के लिये हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मैंने जब भी इस विभाग से सम्पर्क स्थापित किया, इसके सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने जिस आत्मीयता एवं सहृदयता का परिचय दिया, उसका मैं सदैव ऋणी रहूँगा।

मैं श्री प्रवीण कुमार गर्ग (गर्ग कम्प्यूटर्स) एवं श्री विनोद कुमार का भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने सांख्यिकीय तथ्यों के चित्रांकन करने एवं प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को मुद्रित रूप प्रदान करने में अपना हार्दिक सहयोग प्रदान किया है।

मैं अपने श्रद्धेय माता-पिता डॉ० एम० एल० अग्रवाल एवं श्रीमती विजया अग्रवाल; मेरे प्रेरणा-स्रोत बड़े भाई डॉ० मनीष कुमार अग्रवाल एवं स्नेहमयी भाभी श्रीमती नेहा अग्रवाल के प्रति अपने भावपूर्ण उद्‌गारों की अभिव्यक्ति करता हूँ। साथ ही मैं अपनी धर्म-पत्नी श्रीमती कविता अग्रवाल का उनकी सहिष्णुता तथा रचनात्मक सहयोग के लिये आभारी हूँ।

अन्त में, मैं अपने अनुज मंजुल मोहन, भतीजे तुषार, भतीजी तन्वी एवं पुत्र तन्मय के मेरे प्रति उनके निश्च्छल-प्रेम के लिये अपनी भाव-विह्वलता की अभिव्यक्ति करना भी अपना परम् कर्तव्य समझता हूँ क्योंकि यें नन्हें बाल-गोपाल अपनी मनोहारी बाल-सुलभ क्रीड़ाओं से मेरे व्यस्त कार्यक्रम के दौरान यदाकदा मुझे विश्राम के लिये विवश करते रहे।

—मयंक मोहन

# विषय-सूची


| अध्याय | विषय-विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| प्रथम | परिचय | 1 – 35 |
| द्वितीय | साहित्य समीक्षा एवं शोध-प्रणाली | 36 – 53 |
| तृतीय | ग्रामीण निर्धन परिवारों के रोजगार, आय एवं सम्पत्ति-संरचना का विश्लेषण | 54 – 83 |
| चतुर्थ | ग्रामीण निर्धन परिवारों की ऋण-संरचना का विश्लेषण | 84 – 118 |
| पंचम | परियोजनाओं की उपयुक्तता का आकलन | 119 – 138 |
| षष्ठ | ग्रामीण निर्धन परिवारों की वित्तीय आवश्यकता का आकलन | 139 – 158 |
| सप्तम | ग्रामीण निर्धन परिवारों की आय-उत्पत्ति एवं ऋण-भुगतान क्षमता का विश्लेषण | 159 – 176 |
| अष्ठम | ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर परियोजनाओं के प्रभावों का मूल्यांकन | 177 – 192 |
| नवम् | निष्कर्ष एवं सुझाव | 193 – 206 |
| | परिशिष्ट प्रथम | *(i) – (viii)* |
| | परिशिष्ट द्वितीय | *(i) – (viii)* |
| | परिशिष्ट तृतीय | *(i) – (vi)* |


♦ ♦ ♦

# तालिका-सूची


| तालिका संख्या | तालिका विवरण | पृ०सं० |
|---|---|---|
| 1.1.1 | जनपद मेरठ में जनसंख्या वृद्धि का विवरण | 4 |
| 1.1.2 | जनपद मेरठ में जनसंख्या का आयु के अनुसार वर्गीकरण | 5 |
| 1.1.3 | जनपद मेरठ में भूमि उपयोगिता का विवरण | 6 |
| 1.1.4 | जनपद मेरठ में कृषि उत्पादों की उत्पादकता का विवरण (वर्ष 1993-94) | 8 |
| 1.1.5 | जनपद मेरठ में सिंचाई के विभिन्न साधनों का विवरण (1993-94) | 9 |
| 1.1.6 | कृषि जोतों का विवरण | 10 |
| 1.1.7 | जनपद मेरठ में पशुधन का विवरण | 12 |
| 1.1.8 | जनपद मेरठ में वर्ष 1993-94 में खादी एवं लघु औद्योगिक इकाइयों की प्रगति | 14 |
| 1.2.1 | जनपद मेरठ में रोजगार की स्थिति का विवरण | 21 |
| 1.3.1 | जनपद मेरठ के कर्मकरों की रोजगार-संरचना | 28 |
| 1.4.1 | एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत वर्ष 1995-96 में योजनावार परिव्यय का विवरण | 33 |
| 3.1.1 | जनपद मेरठ में रजपुरा विकास खण्ड में चयनित लाभार्थियों का उनके व्यवसाय के अनुसार वर्गीकरण | 55 |
| 3.1.2 | जनपद मेरठ के हस्तिनापुर विकास खण्ड में चयनित लाभार्थियों का उनके व्यवसाय के अनुसार वर्गीकरण | 56 |
| 3.1.3 | जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में चयनित लाभार्थियों की रोजगार-संरचना का तुलनात्मक विवरण | 57 |
| 3.2.1 | जनपद मेरठ के रजपुरा विकास खण्ड में ग्रामीण निर्धन परिवारों की आय-संरचना | 59 |
| 3.2.2 | जनपद मेरठ के हस्तिनापुर विकास खण्ड में ग्रामीण निर्धन परिवारों की आय-संरचना | 60 |
| 3.2.3 | जनपद मेरठ में रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में ग्रामीण निर्धन परिवारों की आय-संरचना का तुलनात्मक विवरण | 61 |
| 3.3.1 | रजपुरा विकास खण्ड में ग्रामीण निर्धन परिवारों की सम्पत्ति-संरचना का विवरण | 63 |

| तालिका संख्या | तालिका विवरण | पृ०सं० |
|---|---|---|
| 3.3.2 | हस्तिनापुर विकास खण्ड में ग्रामीण निर्धन परिवारों की सम्पत्ति-संरचना का विवरण | 70 |
| 3.3.3 | रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में ग्रामीण निर्धन परिवारों की सम्पत्ति-संरचना का तुलनात्मक विवरण | 77 |
| 4.1 (अ) 1 | जनपद मेरठ में रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों से चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर केवल राजकीय-ऋणों के भार का विश्लेषण (ऋण-राशि के आधार पर) | 86 |
| 4.1 (अ) 2 | जनपद मेरठ में रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों से चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर राजकीय ऋणों के भार का विश्लेषण (ऋण की अवधि के आधार पर) | 88 |
| 4.1 (अ) 3 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर राजकीय ऋणों के भार का विश्लेषण (परियोजनाओं के आधार पर) | 89 |
| 4.1 (अ) 4 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर राजकीय ऋणों के भार का विश्लेषण (उद्देश्यों के आधार पर) | 91 |
| 4.1 (ब) 1 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर सरकार के अतिरिक्त महाजनी ऋणों के भार का विश्लेषण (ऋण-राशि के आधार पर) | 93 |
| 4.1 (ब) 2 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर महाजनी ऋणों के भार का विश्लेषण (ऋण की अवधि के आधार पर) | 94 |
| 4.1 (ब) 3 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर महाजनी ऋणों के भार का विश्लेषण (ब्याज-दर के आधार पर) | 96 |
| 4.1 (ब) 4 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर महाजनी ऋणों के भार का विश्लेषण (उद्देश्यों के आधार पर) | 97 |
| 4.1 (स) 1 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर सरकार एवं महाजनों के अतिरिक्त मित्रों एवं सम्बन्धियों के ऋणों के भार का विश्लेषण (ऋण-राशि के आधार पर) | 100 |
| 4.1 (स) 2 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर मित्रों एवं सम्बन्धियों के ऋणों के भार का विश्लेषण (ऋण की अवधि के आधार पर) | 101 |
| 4.1 (स) 3 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर मित्रों एवं सम्बन्धियों के ऋणों के भार का विश्लेषण (ब्याज-दर के आधार पर) | 103 |
| 4.1 (स) 4 | जनपद मेरठ में चुने गये ग्रामीण निर्धन परिवारों पर मित्रों एवं सम्बन्धियों के ऋणों के भार का विश्लेषण (उद्देश्यों के आधार पर) | 104 |

| तालिका संख्या | तालिका विवरण | पृ०सं० |
|---|---|---|
| 4.2.1 | जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में ऋण-राशि के आधार पर विभिन्न प्रकार के ऋण-स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण | 107 |
| 4.2.2 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में ऋण-अवधि के आधार पर विभिन्न प्रकार के ऋण-स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण | 110 |
| 4.2.3 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में ब्याज-दर के आधार पर विभिन्न प्रकार के ऋण-स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण | 113 |
| 4.2.4 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्डों में उद्देश्यों के आधार पर विभिन्न प्रकार के ऋण-स्रोतों का तुलनात्मक विश्लेषण | 116 |
| 5.1.1 | जनपद मेरठ के रजपुरा विकास खण्ड में ग्रामीण निर्धन परिवारों के लिये विभिन्न परियोजनाओं की क्षेत्रीय प्रगति | 122 |
| 5.1.2 | जनपद मेरठ के हस्तिनापुर विकास खण्ड में ग्रामीण निर्धन परिवारों के लिये विभिन्न परियोजनाओं की क्षेत्रीय प्रगति | 125 |
| 5.2.1 | जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में ग्रामीण निर्धन परिवारों के लिये विभिन्न परियोजनाओं की वित्तीय स्थिति का आकलन | 128 |
| 5.3.1 | रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में लाभार्थियों का शिक्षा के आधार पर वर्गीकरण | 133 |
| 5.3.2 | जनपद मेरठ के रजपुरा एवं हस्तिनापुर विकास खण्डों में अनुभव के आधार पर लाभार्थियों वर्गीकरण | 137 |
| 6.1.1 | जनपद मेरठ में चयनित लाभार्थियों का ऋण-राशि के विभिन्न वर्गों के आधार पर वर्गीकरण | 141 |
| 6.1.2 | जनपद मेरठ में चयनित लाभार्थियों का ऋण-राशि के विभिन्न वर्गों के आधार पर ऋण-स्रोतों में वर्गीकरण | 143 |
| 6.1.3 | जनपद मेरठ में चयनित लाभार्थियों का विभिन्न ऋण-स्रोतों के आधार पर वर्गीकरण | 145 |
| 6.1.4 | जनपद मेरठ में चयनित लाभार्थियों का विभिन्न ऋण-स्रोतों के आधार पर ऋण-राशि वर्गों में वर्गीकरण | 147 |
| 6.2.1 | विभिन्न परियोजनाओं के लिये कुल वित्तीय आवश्यकता (स्थिर एवं कार्यशील पूँजी) का आकलन | 151 |
| 6.3.1 | विभिन्न परियोजनाओं के लिये सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता का विवरण | 153 |

| तालिका संख्या | तालिका विवरण | पृ०सं० |
|---|---|---|
| 6.4.1 | विभिन्न परियोजनाओं के लिये सरकार द्वारा प्रदत्त वित्तीय सहायता एवं वास्तविक वित्तीय आवश्यकता का तुलनात्मक विश्लेषण | 156 |
| 7.1.1 | परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व की मासिक औसत आय के आधार पर लाभार्थियों का वर्गीकरण | 161 |
| 7.1.2 | परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त मासिक औसत आय के आधार पर लाभार्थियों का वर्गीकरण | 162 |
| 7.1.3 | परियोजना में सम्मिलित होने के पूर्व एवं उपरान्त विभिन्न आय-वर्गों के आधार पर लाभार्थियों का तुलनात्मक विश्लेषण | 164 |
| 7.1.4 | परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त लाभार्थियों की मासिक औसत-आय का सृजन | 166 |
| 7.2.1 | जनपद मेरठ में ग्रामीण निर्धन परिवारों के लाभार्थियों का परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व एवं परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त मासिक औसत जीवन-निर्वाह व्यय | 169 |
| 7.2.2 | जनपद मेरठ के ग्रामीण निर्धन परिवारों के लाभार्थियों के परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व की मासिक औसत-बचत का आकलन | 170 |
| 7.2.3 | जनपद मेरठ के ग्रामीण निर्धन परिवारों के लाभार्थियों के परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त मासिक औसत-बचत का आकलन | 172 |
| 7.2.4 | जनपद मेरठ में ग्रामीण निर्धन परिवारों के लाभार्थियों के परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व एवं परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त की मासिक औसत-बचत का तुलनात्मक विश्लेषण | 173 |
| 8.1 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में कृषि-परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन | 178 |
| 8.2 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में लघु-सिंचाई परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन | 181 |
| 8.3 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में पशुपालन परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन | 184 |
| 8.4 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में कुटीर-उद्योग परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन | 187 |
| 8.5 | जनपद मेरठ के चयनित विकास खण्ड़ों में सेवा एवं व्यवसाय परियोजना का ग्रामीण निर्धन परिवारों के जीवन-स्तर पर प्रभाव का आकलन | 190 |

# प्रथम परिशिष्ट



| तालिका संख्या | तालिका विवरण | पृ०सं० |
|---|---|---|
| 1.1 | परियोजना में सम्मिलित होने से पूर्व एवं उपरान्त लाभार्थियों का उनकी आय-वर्ग के अनुसार वर्गीकरण | *(i)* |
| 1.2 | परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त लाभार्थियों के आय-वर्ग अन्तरण का विश्लेषण | *(ii)* |
| 1.3 | 500 रु० मासिक औसत-आय वाले लाभार्थियों की परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त अतिरिक्त मासिक औसत-आय (आय के सृजन) की गणना | *(iii)* |
| 1.4 | 1250 रु० मासिक औसत-आय वाले लाभार्थियों की परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त अतिरिक्त मासिक औसत-आय (आय के सृजन) की गणना | *(iv)* |
| 1.5 | 1750 रु० मासिक औसत-आय वाले लाभार्थियों की परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त अतिरिक्त मासिक औसत-आय (आय के सृजन) की गणना | *(v)* |
| 1.6 | 2250 रु० मासिक औसत-आय वाले लाभार्थियों की परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त अतिरिक्त मासिक औसत-आय (आय के सृजन) की गणना | *(vi)* |
| 1.7 | 2750 रु० मासिक औसत-आय वाले लाभार्थियों की परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त अतिरिक्त मासिक औसत-आय (आय के सृजन) की गणना | *(vii)* |
| 1.8 | 3250 रु० मासिक औसत-आय वाले लाभार्थियों की परियोजना में सम्मिलित होने के उपरान्त अतिरिक्त मासिक औसत-आय (आय के सृजन) की गणना | *(viii)* |



♦ ♦ ♦
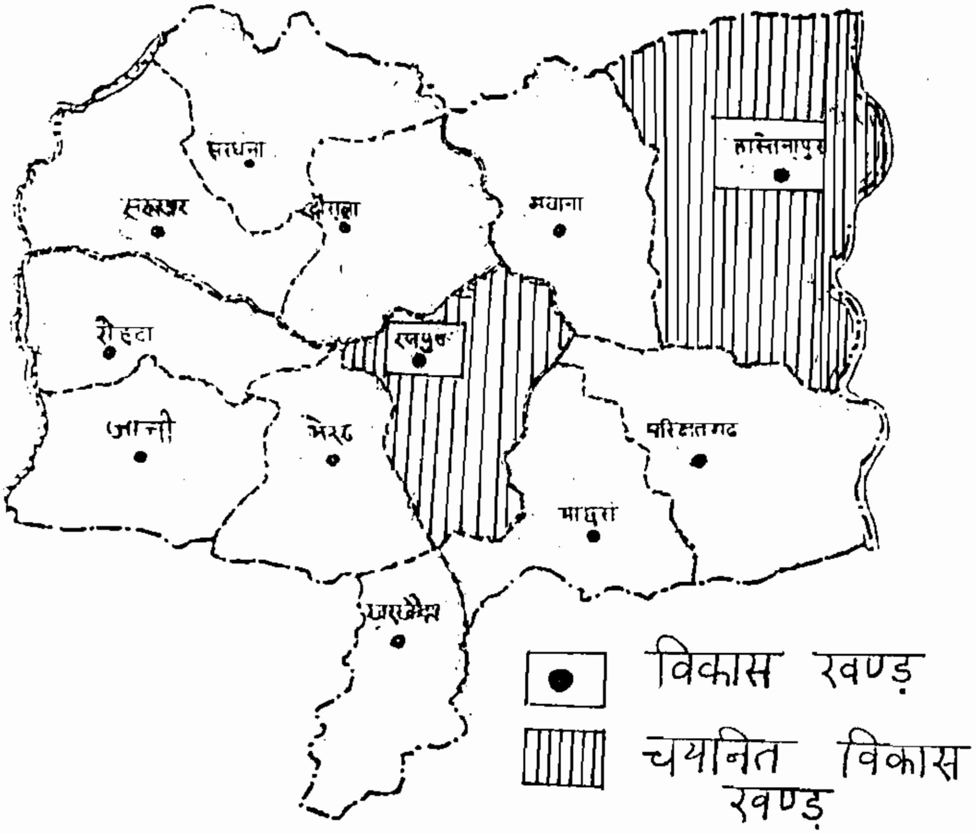
# जनपद मेरठ का (विकास-खण्डवार) मानचित्र